

तदनन्तर उन प्रसिद्ध याज्ञवल्क्यजीसे भरद्वाजने पूछा—‘भगवन्! किन मन्त्रोंद्वारा स्तुति करनेपर भगवान् श्रीराम प्रसन्न होते हैं और अपने स्वरूपका प्रत्यक्ष दर्शन कराते हैं? उन मन्त्रोंका आप हमें उपदेश करें।’

तब वे प्रसिद्ध महर्षि याज्ञवल्क्यजी बोले—
‘ब्रह्मन्! जिस प्रकार भगवान् शङ्करको वरदान देते हुए श्रीरामजीने काशीका महत्त्व बताया था, उसी प्रकार किसी समय ब्रह्माजीको भी उन्होंने वैसा ही उपदेश दिया था। उनके द्वारा ऐसा उपदेश पाकर ब्रह्माजीने निम्नाङ्कित गद्यमयी गाथासे उन्हें नमस्कार किया।

जो सम्पूर्ण विश्वके आधार और महाविष्णुरूप हैं, रोग-शोकसे रहित नारायण हैं, परिपूर्ण आनन्द-विज्ञानके आश्रय हैं और परम प्रकाशरूप हैं, उन परमेश्वर श्रीरामका मन-ही-मन स्तवन करते हुए ब्रह्माजीने उनकी इस प्रकार स्तुति की—

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् द्वैतपरमानन्दात्मा यत् परं ब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चाखण्डैकरसात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च ब्रह्मानन्दामृतं भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यत् तारकं ब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो ब्रह्मा विष्णुरीश्वरो यः सर्वदेवात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ५ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये सर्वे वेदाः साङ्गाः सशाखाः सपुराणा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ६ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो जीवात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ७ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सर्वभूतान्तरात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ८ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये देवासुर-मनुष्यादिभावा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ९ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये मत्स्यकूर्माद्यवतारा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १० ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च प्राणो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ११ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् योऽन्तः-करणचतुष्टयात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १२ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च यमो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १३ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चान्तको भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १४ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च मृत्युर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १५ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्चामृतं भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १६ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यानि पञ्चमहाभूतानि भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १७ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः स्थावरजङ्गमात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १८ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च पञ्चाग्रयो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ १९ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् याः सप्तमहाव्याहतयो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २० ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या विद्या भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २१ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या सरस्वती
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २२ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या लक्ष्मीर्भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २३ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या गौरी भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २४ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या जानकी
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २५ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च त्रैलोक्यं
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २६ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सूर्यो भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २७ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सोमो भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २८ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यानि च नक्षत्राणि
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ २९ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च नवग्रहा
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३० ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चाष्टौ
लोकपाला भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३१ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चाष्टौ वसवो
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३२ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चैकादश रुद्रा
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३३ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च द्वादशादित्या
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३४ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च भूतं भव्यं
भविष्यद् भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३५ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च
ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्याप्नोति विराड् भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै
नमो नमः ॥ ३६ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो हिरण्यगर्भो
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३७ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या प्रकृतिर्भूर्भुवः

स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३८ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चोङ्कारो भूर्भुवः
स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ३९ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चतस्रोऽर्द्धमात्रा
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४० ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः परमपुरुषो
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४१ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च महेश्वरो
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४२ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च महादेवो
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४३ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् य ओं नमो
भगवते वासुदेवाय यो महाविष्णुर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो
नमः ॥ ४४ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः परमात्मा
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४५ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो विज्ञानात्मा
भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४६ ॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः
सच्चिदानन्दैकरसात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४७ ॥

ॐ जो जगत्-प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय
ही भगवान् (षड्विध* ऐश्वर्यसे सम्पन्न) हैं, अद्वितीय
परमानन्दस्वरूप हैं। जो सर्वोत्कृष्ट ब्रह्म तथा भूर्भुवः
स्वः—ये तीनों लोक हैं, वह सब भी वे ही हैं; उन
श्रीरामचन्द्रजीको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है।
ॐ जो सर्वत्र विख्यात श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय ही
भगवान् हैं तथा जो अखण्डैकरसस्वरूप परमात्मा एवं
भूः, भुवः, स्वः—ये तीनों लोक हैं, वह सब भी वे ही
हैं। निश्चय ही उन्हें मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो
सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय ही भगवान् हैं तथा
जो आनन्दमय, अमृतमय ब्रह्म तथा भूः आदि तीनों
लोक हैं, वह सब भी उन्हींका स्वरूप है। उन भगवान्
श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो
सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं;
तथा जो तारक ब्रह्म और भूः, भुवः, स्वः नामसे प्रसिद्ध
तीनों लोक हैं, वह सब कुछ उन्हींका स्वरूप है। उन

* सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण यश, सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण वैराग्य—इन छःका नाम भग है। जिन पूर्णतम परमेश्वरमें ये छहों परिपूर्णरूपसे नित्य-निरन्तर स्थित रहते हैं, वे 'भगवान्' कहे गये हैं।

महादेव एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस द्वादशाक्षर-मन्त्रसे नमस्कार करनेयोग्य महाविष्णु एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो परमात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो विज्ञानात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो सच्चिदानन्दैक-रसात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है' ॥ ३१—४७ ॥

जो ब्रह्मवेत्ता इन (मन्त्रराजके ४७ अक्षरोंके अनुसार) सैंतालीस मन्त्रोंसे प्रतिदिन भगवान् श्रीरामका स्तवन करता है, उसके ऊपर इस स्तुतिसे भगवान् प्रसन्न होते हैं। अतः जो इन मन्त्रोंसे प्रतिदिन भगवान्की स्तुति करता है, वह भगवान्का प्रत्यक्ष दर्शन करता है; वह अमृतत्वको प्राप्त होता है, वह अमृतत्वको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

॥ अथर्ववेदीय श्रीरामोत्तरतापनीयोपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति:!!!